KENDRIYA VIDYALAYA - KNOW THE PERSONALITY

# भारत रत्न महामना मदनमोहन मालवीय

आधुनिक भारत के निर्माण का जिन महापुरुषों ने सपना देखा और उसे मूर्त रूप प्रदान किया, उनमें महामना मदन मोहन मालवीय का नाम शीर्ष पर है। मालवीयजी को उनकी 154वीं जयंती के अवसर पर भारत रत्न दिया जाना उन्हें राष्ट्र की ओर से दी गई सच्ची श्रद्धांजलि है। यह मालवीयजी के अवदान का कृतज्ञतापूर्ण स्मरण है। मदन मोहन मालवीय का जन्म संगम नगरी इलाहाबाद में हुआ था, किंतु काशी में गंगातट को उन्होंने अपनी साधना का क्षेत्र चुना। विश्व स्तर की शैक्षिक संस्था काशी हिंदू विश्वविद्यालय को सरस्वती के प्रतीक के तौर पर उन्होंने स्थापित किया। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मालवीय ने कठोर साधनातपस्या - गांव-की। गांव, रईसरजवाड़े-, अमीरगरीब और यहां तक कि रिक्शा चलाने वालों-,

मजदूरी करने वालों से भी एकएक-, दोदो पैसा-, इकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी का दान एकत्र करके इस विश्वविद्यालय को खड़ा करने वाले इस संकल्पजीवी को भिखारियों का राजा कहा गया। आलोचनाओं और तिरस्कार की (किंग ऑफ बेगर्स) परवाह किए बिना मदन मोहन मालवीय ने विश्वविद्यालय बनाने का सपना1904 में देखा और 1916 को बसंत पंचमी के दिन महात्मा गांधी की उपस्थिति में शिलान्यास के साथ इसे मूर्त रूप दिया। आज 30 हजार छात्रछात्राओं वाले एशिया --के इस सबसे बड़े विश्वविद्यालय में प्राचीन ज्ञान के साथ ही आधुनिकतम ज्ञान विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। उनका यही एक अवदान उन्हें भारत नहीं, विश्व रत्न का समादर प्रदान करने के लिए पर्याप्त है।

मदन मोहन मालवीय का व्यक्तित्व भारतीयता का प्रतिबिंब था। वह पहले अध्यापक थे, फिर संपादक बने और आगे चलकर वकालत के पेशे में आए। वह जहां भी रहे, अपनी अमिट छाप छोड़ी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत के दौरान उन्होंने अपने हाथ से पैसा न छूने का व्रत लिया। मालवीयजी कभी कोई झूठा अथवा गलत मुकदमा नहीं लेते थे। इस कारण से वकालत के पेशे में उनको अविश्वसनीय सम्मान प्राप्त हुआ। समाज सुधार, गोसेवा हेतु गोशालाओं की स्थापना, शिक्षा, पुस्तकालयों की स्थापना आदि कार्यों में व्यस्त होने के कारण वकालत छोड़ चुके मालवीयजी लगभग दो दशकों के लंबे अंतराल के बाद दोबारा न्याय के संघर्ष क्षेत्र में लौट आए। गोरखपुर में अंग्रेजी शासन के खिलाफ हुए ऐतिहासिक चौरीचौरा कांड में फांसी की सजा पा चुके 150 आरोपियों को उन्होंने फांसी की सजा से बचा लिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में उन्हें इस विजय के लिए प्रशंसा और सम्मान मिला। वस्तुतमालवीयजी का योगदान इतना बहुविध : था कि कुछ शब्दों में इसे व्यक्त कर पाना असंभव है।

स्वाधीनता संग्राम के लिए संघर्षरत कांग्रेस के अग्रणी राजनेता, देशभक्त, समाज सुधारक, अध्यापक, शिक्षाविद्, संपादक, गंगा एवं गोभक्त, श्रीमद्भागवत एवं गीता के अनन्य विद्वान, कर्मयोगी, वक्ता, वकील आदि भूमिकाओं में उन्होंने राष्ट्र के विकास हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। महज 25 वर्ष की आयु में 1886 में उन्होंने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में अपने गुरु आदित्यराम भट्टाचार्य के साथ भाग लिया और देशसेवा के भाव से प्रेरित होकर अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र की

स्वाधीनता के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। वह कांग्रेस में अनेक उच्च पदों पर भी रहे। इलाहाबाद में हिंदू समाज और साहित्य सभा यानी लिटरेरी इंस्टीट्यूट नामक संस्थान तथा पुस्तकालय की स्थापना की। प्रयाग, काशी और मथुरावृंदावन में उनकी प्रेरणा से गोशालाएं स्थापित हुईं। काशी विश्वनाथ मंदिर में - और उन्होंने हरिजन प्रवेश आंदोलन का नेतृत्व किया। आज गंगा की अविरल धारा प्रदूषण मुक्ति का सवाल एक राष्ट्रीय प्रश्न बन चुका है। गंगा महासभा की स्थापना के माध्यम से मालवीयजी ने लगभग सात दशक पूर्व इस प्रश्न की भयावहता को समझकर ही गंगा की अविरल धारा के लिए आंदोलन किया और अंग्रेज शासन को समझौता करने के लिए बाध्य किया। वह एक भविष्यद्रष्टा थे। आज काशी हिंदू विश्वविद्यालय और मालवीयजी के बगैर आधुनिक भारत की कोई भी कल्पना नामुमकिन है।

महामना मालवीय का पत्रकारिता क्षेत्र में दिया गया योगदान अविस्मरणीय है। हिंदोस्थान नामक साप्ताहिक पत्र को उन्होंने दैनिक पत्र के रूप में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में स्थित कालाकांकर क्षेत्र से संपादित किया। वह संपादक की स्वतंत्रता तथा गरिमा के प्रबल पक्षधर थे। कालाकांकर के राजा और इस पत्र के मालिक राजा रामपाल सिंह ने एक दिन शराब के नशे में उनसे बात की। स्वाभिमानी और सिद्धांतों में विश्वास रखने वाले मालवीयजी ने इसके बाद हिंदोस्थान से नाता तोड़ लिया। बाद में इंडियन ओपीनियन, लीडर, मर्यादा, सनातन धर्म तथा अभ्युदय के संपादन के माध्यम से उन्होंने पत्रकारिता की सेवा की। वह भारतीय पत्रकारिता के स्तंभ के रूप में समादृत हैं। श्रीमद्भागवत और गीता के विख्यात व्याख्याकार के रूप में मालवीयजी की धार्मिक, आध्यात्मिक ऊर्जा एवं छवि को सभी नमन करते हैं। वह भारतीय मनीषा के प्रतीक हैं। मालवीयजी को राजनीतिक दलों की परिधि में बांधना असंभव है। वह कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की पंक्ति में रहे। भारतीयता की प्रतिमूर्ति थे। राष्ट्र की स्वाधीनता और अस्मिता के लिए उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया। देश की युवा पीढ़ी के मार्गदर्शक थे। वह मानते थे कि मुझे स्वर्ग, राज्यशक्ति, मोक्ष जैसी किसी भी भौतिक उपलब्धि की अपेक्षा नहीं है, मुझे तो दुखों से पीड़ित लोगों की पीड़ा दूर करनी है। ऐसे महान मनीषी को किसी भी दायरे में बांधना समय और इतिहास के साथ अन्याय होगा।

मालवीयजी कांग्रेस, भाजपा या किसी भी अन्य राजनीतिक दल के नहीं, बल्कि समूचे राष्ट्र के हैं। समूचा राष्ट्र उनका ऋणी है। वास्तव में उन्हें भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित करके समूचा राष्ट्र गौरवान्वित हुआ है।

## पूर्ण परिचय

महामना मदन मोहन मालवीय (25 दिसम्बर 1861 - 1946) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृ भाषा तथा भारतमाता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिये तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सकें। मालवीयजी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्मत्याग में अद्वितीय थे। इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे अपितु स्वयं उनका पालन भी किया करते थे। वे अपने व्यवहार में सदैव मृदुभाषी रहे।

कर्म ही उनका जीवन था। अनेकों संस्थाओं के जनक एवं सफल संचालक के रूप में उनकी अपनी विधि व्यवस्था का सुचारु सम्पादन करते हुए उन्होंने कभी भी रोष अथवा कड़ी भाषा का प्रयोग नहीं किया।

मालवीयजी का जन्म प्रयाग में, जिसे स्वतन्त्र भारत में इलाहाबाद कहा जाता है, 25 दिसम्बर 1861 को पं० ब्रजनाथ व मूनादेवी के यहाँ हुआ था। वे अपने माता-पिता से उत्पन्न कुल सात भाई बहनों में पाँचवें पुत्र थे। मध्य के मालवा प्रान्त से प्रयाग आ बसे उनके पूर्वज मालवीय कहलाते थे। आगे चलकर यही जातिसूचक नाम उन्होंने भी अपना लिया। उनके पिता पण्डित ब्रजनाथजी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। वे श्रीमद्भागवत की कथा सुनाकर अपनी आजीविका अर्जित करते थे।

पाँच वर्ष की आयु में उन्हें उनके माँ-बाप ने संस्कृत भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा लेने हेतु पण्डित हरदेव धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला में भर्ती करा दिया जहाँ से उन्होंने

प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके पश्चात वे एक अन्य विद्यालय में भेज दिये गये जिसे प्रयाग की विद्या वर्धिनी सभा संचालित करती थी। यहाँ से शिक्षा पूर्ण कर वे इलाहाबाद के ज़िला स्कूल पढने गये। यहीं उन्होंने मकरंद के उपनाम से कवितायें लिखनी प्रारम्भ कीं। उनकी कवितायें पत्र-पत्रिकाओं में खूब छपती थीं। लोगबाग उन्हें चाव से पढते थे। 1879 में उन्होंने म्योर सेण्ट्रल कॉलेज से, जो आजकल इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है, मैट्रीकुलेशन (दसवीं की परीक्षा) उत्तीर्ण की। हैरिसन स्कूल के प्रिन्सिपल ने उन्हें छात्रवृत्ति देकर कलकत्ता विश्वविद्यालय भेजा जहाँ से उन्होंने 1884 ई० में बी०ए० की उपाधि प्राप्त की।

## पूर्ण परिचय

अपने हृदय की महानता के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में 'महामना' के नाम से पूज्य मालवीयजी को संसार में सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था। करुणामय हृदय, भूतानुकम्पा, मनुष्यमात्र में अद्वेष, शरीर, मन और वाणी के संयम, धर्म और देश के लिये सर्वस्व त्याग, उत्साह और धैर्य, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में भी आत्मविश्वासपूर्वक दूसरों को असम्भव प्रतीत होने वाले कर्मों का संपादन, वेशभूषा और आचार विचार में मालवीयजी भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे।

"सिर जाय तो जाय प्रभु! मेरो धर्म न जाय" मालवीयजी का जीवन व्रत था जिससे उनका वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन समान रूप से प्रभावित था। यह आदर्श उन्हें बचपन में ही अपन पितामह प्रेमधर चतुर्वेदी, जिन्होंने 108 दिन निरन्तर 108 बार श्रीमद्भागवत का पारायण किया था, से राधा-कृष्ण की अनन्य भक्ति, पिता ब्रजनाथजी की भागवत-कथा से धर्म-प्रचार एवं माता मूनादेवी से दुखियों की सेवा करने का स्वभाव प्राप्त हुआ था। धनहीन किन्तु निर्लोभी परिवार में पलते हुए भी देश की दरिद्रता तथा अर्थार्थी छात्रों के कष्ट निवारण के स्वभाव से उनका जीवन ओतप्रोत था। बचपन में जिन आचार विचारों का निर्माण हुआ उससे रेल में, जेल में तथा जलयान में कहीं पर भी प्रात:सायं सन्ध्योपासना तथा श्रीमद्भागवत और महाभारत का स्वाध्याय उनके जीवन का अभिन्न अंग बना रहा।

मालवीय जी ने प्रयाग की धर्म ज्ञानोपदेश तथा विद्याधर्म प्रवर्द्धिनी पाठशालाओं में संस्कृत का अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् म्योर सेंट्रल कालेज से 1884 ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय की बी० ए० की उपाधि ली। इस बीच अखाड़े में व्यायाम और सितार पर शास्त्रीय संगीत की शिक्षा वे बराबर देते रहे। उनका व्यायाम करने का नियम इतना अद्भुत था कि साठ वर्ष की अवस्था तक वे नियमित व्यायाम करते ही रहे।

सात वर्ष के मदनमोहन को धर्मज्ञानोपदेश पाठशाला के देवकीनन्दन मालवीय माघ मेले में ले जाकर मूढ़े पर खड़ा करके व्याख्यान दिलवाते थे। शायद इसका ही परिणाम था कि कांग्रेस के द्वितीय अधिवेशन में अंग्रेजी के प्रथम भाषण से ही प्रतिनिधियों को मन्त्रमुग्ध कर देने वाले मृदुभाषी (सिलवर टंग्ड) मालवीयजी उस समय विद्यमान भारत देश के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी के व्याख्यान वाचस्पतियों में इतने अधिक प्रसिद्ध हुए। हिन्दू धर्मोपदेश, मन्त्रदीक्षा और सनातन धर्म प्रदीप ग्रथों में उनके धार्मिक विचार अज भी उपलब्ध हैं जो परतन्त्र भारत देश की विभिन्न समस्याओं पर बड़ी कौंसिल से लेकर असंख्य सभा सम्मेलनों में दिये गये हजारों व्याख्यानों के रूप में भावी पीढ़ियों के उपयोगार्थ प्रेरणा और ज्ञान के अमित भण्डार हैं। उनके बड़ी कौंसिल में रौलट बिल के विरोध में निरन्तर साढ़े चार घण्टे और अपराध निर्मोचन (अंग्रेजी: Indemnity) बिल पर पाँच घण्टे के भाषण निर्भयता और गम्भीरतापूर्ण दीर्घवक्तृता के लिये आज भी स्मरणीय हैं। उनके उद्घरणों में हृदय को स्पर्श करके रुला देने की क्षमता थी, परन्तु वे अविवेकपूर्ण कार्य के लिये श्रोताओं को कभी उकसाते नहीं थे।

म्योर कालेज के मानसगुरु महामहोपाध्याय पं० आदित्यराम भट्टाचार्य के साथ 1880 ई० में स्थापित हिन्दू समाज में मालवीयजी भाग ले ही रहे थे कि उन्हीं दिनों प्रयाग में वाइसराय लार्ड रिपन का आगमन हुआ। रिपन जो स्थानीय स्वायत्त शासन स्थापित करने के कारण भारतवासियों में जितने लोकप्रिय थे उतने ही अंग्रेजों के कोपभाजन भी। इसी कारण प्रिसिपल हैरिसन के कहने पर उनका स्वागत संगठित करके मालवीयजी ने प्रयाग वासियों के हृदय में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

## अन्य उल्लेखनीय कार्य

कालाकाँकर के देशभक्त राजा रामपाल सिंह के अनुरोध पर मालवीयजी ने उनके हिन्दी अंग्रेजी समाचार पत्र हिन्दुस्तान का 1887 से सम्पादन करके दो ढाई साल तक जनता को जगाया। उन्होंने कांग्रेस के ही एक अन्य नेता पं0 अयोध्यानाथ का उनके इण्डियन ओपीनियन के सम्पादन में भी हाथ बँटाया और 1907 ई0 में साप्ताहिक अभ्युदय को निकालकर कुछ समय तक उसे भी सम्पादित किया। यही नहीं सरकार समर्थक समाचार पत्र पायोनियर के समकक्ष 1909 में दैनिक लीडर अखबार निकालकर लोकमत निर्माण का महान कार्य सम्पन्न किया तथा दूसरे वर्ष मर्यादा पत्रिका भी प्रकाशित की। इसके बाद उन्होंने 1924 ई0 में दिल्ली आकर हिन्दुस्तान टाइम्स को सुव्यवस्थित किया तथा सनातन धर्म को गति प्रदान करने हेतु लाहौर से विश्वबन्द्य जैसे अग्रणी पत्र को प्रकाशित करवाया।

हिन्दी के उत्थान में मालवीय जी की भूमिका ऐतिहासिक है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में हिन्दी गद्य के निर्माण में संलग्न मनीषियों में 'मकरंद' तथा 'झक्कड़सिंह' के उपनाम से विद्यार्थी जीवन में रसात्मक काव्य रचना के लिये ख्यातिलब्ध मालवीयजी ने देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल के सम्मुख 1898 ई0 में विविध प्रमाण प्रस्तुत करके कचहरियों में प्रवेश दिलाया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन (काशी-1910) के अध्यक्षीय अभिभाषण में हिन्दी के स्वरूप निरूपण में उन्होंने कहा कि "उसे फारसी अरबी के बड़े बड़े शब्दों से लादना जैसे बुरा है, वैसे ही अकारण संस्कृत शब्दों से गूँथना भी अच्छा नहीं और भविष्यवाणी की कि एक दिन यही भाषा राष्ट्रभाषा होगी।" सम्मेलन के एक अन्य वार्षिक अधिवेशन (बम्बई-1919) के सभापति पद से उन्होंने हिन्दी उर्दू के प्रश्न को, धर्म का नहीं अपितु राष्ट्रीयता का प्रश्न बतलाते हुए उद्घोष किया कि साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है। समस्त देश की प्रान्तीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिन्दी को अपनाने के आग्रह के साथ यह भविष्यवाणी भी की कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा कि जिस भाँति अंग्रेजी विश्वभाषा हो रही है उसी भाँति हिन्दी का भी सर्वत्र प्रचार होगा। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय रूप का लक्ष्य भी दिया।

कांग्रेस के निर्माताओं में विख्यात मालवीयजी ने उसके द्वितीय अधिवेशन (कलकत्ता-1886) से लेकर अपनी अन्तिम साँस तक स्वराज्य के लिये कठोर तप किया। उसके प्रथम उत्थान में नरम और गरम दलों के बीच की कड़ी मालवीयजी ही थे जो गान्धी-युग की कांग्रेस में हिन्दू मुसलमानों एवं उसके विभिन्न मतों में सामंजस्य स्थापित करने में प्रयत्नशील रहे। एनी बेसेंट ने ठीक कहा था कि "मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि विभिन्न मतों के बीच, केवल मालवीयजी भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हुए हैं।" असहयोग आन्दोलन के आरम्भ तक नरम दल के नेताओं के कांग्रेस को छोड़ देने पर मालवीयजी उसमें डटे रहे और कांग्रेस ने उन्हें चार बार सभापति निर्वाचित करके सम्मानित किया। लाहौर (1909 में), दिल्ली (1918 और 1931 में) तथा कलकत्ता (1933 में)। यद्यपि अन्तिम दोनों बार वे सत्याग्रह के कारण पहले ही गिरफ्तार कर लिये गये। स्वतन्त्रता के लिये उनकी तड़प और प्रयासों के परिचायक फैजपुर कांग्रेस (1936) में राष्ट्रीय सरकार और चुनाव प्रस्ताव के समर्थन में मालवीयजी के ये शब्द स्मरणीय हैं कि मैं पचास वर्ष से कांग्रेस के साथ हूँ। सम्भव है मैं बहुत दिन न जियूँ और अपने जी में यह कसक लेकर मरूँ कि भारत अब भी पराधीन है। किंतु फिर भी मैं यह आशा करता हूँ कि मैं इस भारत को स्वतन्त्र देख सकूँगा।

## स्वातन्त्र्य संग्राम में भूमिका

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक विभाग असहयोग आंदोलन के चतुर्सूत्री कार्यक्रम में शिक्षा संस्थाओं के बहिष्कार का मालवीयजी ने खुलकर विरोध किया जिसके कारण उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से हिन्दू विश्वविद्यालय पर उसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। 1921 ई0 में कांग्रेस के नेताओं तथा स्वयंसेवकों से जेल भर जाने पर किंकर्तव्यविमूढ़ वाइसराय लॉर्ड रीडिंग को प्रान्तों में स्वशासन देकर गान्धीजी से सन्धि कर लेने को मालवीयजी ने भी सहमत कर लिया था परन्तु 4 फ़रवरी 1922 के चौरीचौरा काण्ड ने इतिहास को पलट दिया; गान्धीजी ने बारदौली की कार्यकारिणी में बिना किसी से परामर्श किये सत्याग्रह को अचानक रोक दिया। इससे कांग्रेस जनों में असन्तोष फैल गया और यह खुसुरपुसुर होने लगी कि बड़ा भाई के कहने में आकर गान्धीजी ने यह भयंकर भूल की है। गान्धीजी स्वयं भी पाँच साल के लिये जेल भेज दिये गये। इसके परिणामस्वरूप चिलचिलाती धूप में

इकसठ वर्ष के बूढ़े मालवीय ने पेशावर से डिब्रूगढ़ तक तूफानी दौरा करके राष्ट्रीय चेतना को जीवित रखा। इस भ्रमण में उन्होंने बहुत बार कुख्यात धारा 144 का उल्लंघन भी किया जिसे सरकार खून का घूँट समझकर पी गयी। परन्तु 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में उसी ब्रिटिश सरकार ने उन्हें बम्बई में गिरफ्तार कर लिया जिस पर श्रीयुत् भगवान दास (भारतरत्न) ने कहा था कि मालवीयजी का पकड़ा जाना राष्ट्रीय यज्ञ की पूर्णाहुति समझी जानी चाहिये। उसी साल दिल्ली में अवैध घोषित कार्यसमिति की बैठक में मालवीयजी को पुन: बन्दी बनाकर नैनी जेल भेज दिया गया। यह उनकी जीवनचर्या तथा वृद्धावस्था के कारण यथार्थ में एक प्रकार की तपस्या थी। परन्तु सैद्धान्तिक मतभेद के कारण हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रिंस ऑव वेल्स का स्वागत और कांग्रेस स्वराज्य पार्टी के समकक्ष कांग्रेस स्वतंत्र दल व रैमजे मैकडॉनल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय पर, जिसकी स्वीकृति को मालवीयजी ने राष्ट्रीय आत्महत्या माना। इस प्रकार कांग्रेस की अस्वीकार नीति के कारण निर्णय विरोधी सम्मेलन और राष्ट्रीय कांग्रेस दल का पुन: संगठन करने जैसे उनके कांग्रेस विरोध के उदाहरण भी इतिहास उल्लेखनीय हैं।

## धर्म संस्कृति रक्षा

सनातन धर्म व हिन्दू संस्कृति की रक्षा और संवर्धन में मालवीयजी का योगदान अनन्य है। जनबल तथा मनोबल में नित्यश: क्षयशील हिन्दू जाति को विनाश से बचाने के लिये उन्होंने हिन्दू संगठन का शक्तिशाली आन्दोलन चलाया और स्वयं अनुदार सहधर्मियों के तीव्र प्रतिवाद झेलते हुए भी कलकत्ता, काशी, प्रयाग और नासिक में भंगियों को धर्मोपदेश और मन्त्रदीक्षा दी। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रनेता मालवीयजी ने, जैसा स्वयं पं0 जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है, अपने नेतृत्वकाल में हिन्दू महासभा को राजनीतिक प्रतिक्रियावादिता से मुक्त रखा और अनेक बार धर्मो के सहअस्तित्व में अपनी आस्था को अभिव्यक्त किया।

प्रयाग के भारती भवन पुस्तकालय, मैकडोनेल यूनिवर्सिटी हिन्दू छात्रालय और मिण्टो पार्क के जन्मदाता, बाढ़, भूकम्प, सांप्रदायिक दंगों व मार्शल ला से त्रस्त दु:खियों के आँसू पोंछने वाले मालवीयजी को ऋषिकुल हरिद्वार, गोरक्षा और

आयुर्वेद सम्मेलन तथा सेवा समिति, ब्वॉय स्काउट तथा अन्य कई संस्थाओं को स्थापित अथवा प्रोत्साहित करने का श्रेय प्राप्त हुआ, किन्तु उनका अक्षय-कीर्ति-स्तम्भ तो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ही है जिसमें उनकी विशाल बुद्धि, संकल्प, देशप्रेम, क्रियाशक्ति तथा तप और त्याग साक्षात् मूर्तिमान हैं। विश्वविद्यालय के उद्देश्यों में हिन्दू समाज और संसार के हित के लिये भारत की प्राचीन सभ्यता और महत्ता की रक्षा, संस्कृत विद्या के विकास एवं पाश्चात्य विज्ञान के साथ भारत की विविध विद्याओं और कलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी गयी। उसके विशाल तथा भव्य भवनों एवं विश्वनाथ मन्दिर में भारतीय स्थापत्य कला के अलंकरण भी मालवीय जी के आदर्श के ही प्रतिफल हैं।